
WHAT WE
LEAVE
UNSEEN

भाग दो

दहलीज़ 8

जो हम अदृश्य छोड़ जाते हैं

एक सवाल है जो देर से आता है।

हमारी कल्पना से कहीं बाद में।

जवानी में हम जीवन से पूछते हैं कि हम क्या पा सकेंगे।

वयस्क होकर हम पूछते हैं कि हम क्या बचाए रख सकेंगे।

बहुत सालों बाद ही हम ख़ुद से कुछ अलग पूछना शुरू करते हैं।

जब हम यहाँ नहीं होंगे, तो क्या बचेगा?

यह ऐसा सवाल है जो शायद ही कभी ज़ोर से बोला जाता है।

शायद इसलिए कि यह हमें बेचैन करता है।

शायद इसलिए कि यह हमें वर्तमान से परे देखने पर मजबूर करता है।

शायद इसलिए कि कोई भी अपनी अनुपस्थिति का सामना करना पसंद नहीं करता।

और फिर भी वह आता है।

हमेशा।

देर-सवेर वह आता है।

लंबे समय तक मैं मानता रहा कि विरासत कुछ दिखाई देने वाली चीज़ है।

एक कृति।

एक कंपनी।

एक घर।

एक किताब।

एक नतीजा।

कुछ ऐसा जिसकी ओर इशारा करके दिखाया और पहचाना जा सके।

फिर समय ने मुझे एक गहरा सच दिखाया।

जो सबसे महत्वपूर्ण चीज़ें हम छोड़ते हैं, वे देखी नहीं जा सकतीं।

वे किसी सूची में नहीं आतीं।

वे बही-खातों में दर्ज नहीं होतीं।

वे आँकड़ों में जगह नहीं पातीं।

और फिर भी वे जीती रहती हैं।

मैं ऐसे लोगों से मिला हूँ जिन्होंने कभी कोई किताब नहीं लिखी पर दर्जनों इंसानों के जीवन बदल दिए।

ऐसे लोग जिन्होंने कभी बड़े संगठनों का नेतृत्व नहीं किया पर पूरे-के-पूरे परिवारों पर अमिट छाप छोड़ी।

ऐसे लोग जो किसी विश्वकोश में नहीं आएँगे और जो, फिर भी, अपने कर्मों के परिणामों के ज़रिए मौजूद रहते हैं।

इस खोज ने सफलता को देखने का मेरा तरीक़ा बदल दिया।

क्योंकि सफलता को दिखना पसंद है।

सच्ची विरासत, इसके विपरीत, अक्सर छाया में काम करती है।

आइए अपने माता-पिता के बारे में सोचें।

अपने शिक्षकों के बारे में।

उन कुछ लोगों के बारे में जिनसे हम बस कुछ महीनों के लिए मिले और जो दशकों तक हम पर असर डाल सके।

उनमें से बहुतों को बिल्कुल पता नहीं कि उनका हम पर क्या असर हुआ।

वे बोले।

उन्होंने कर्म किया।

वे जिए।

और कुछ बचा रहा।

कुछ ऐसा जो आज भी जारी है।

यही मानव इतिहास का अदृश्य हिस्सा है।

सबसे बड़ा।

सबसे कम कहा गया।

सबसे शक्तिशाली।

जैसे-जैसे साल बीते, मैं अपने ही चुनावों को अलग तरह से देखने लगा।

मैं ख़ुद से अब सिर्फ़ यह नहीं पूछता था:

"मैं क्या बना रहा हूँ?"

मैं ख़ुद से पूछता था:

"मैं क्या सौंप रहा हूँ?"

फ़र्क़ बारीक है।

पर यह सब कुछ बदल देता है।

बनाना वर्तमान से जुड़ा है।

सौंपना भविष्य से जुड़ा है।

और भविष्य में हमेशा ऐसे लोग बसते हैं जिन्हें हम नहीं जान सकते।

बच्चे।

नाती-पोते।

पाठक।

दोस्त।

अजनबी।

ऐसे लोग जो एक दिन किसी ऐसी चीज़ के संपर्क में आएँगे जिसे हम अपने पीछे छोड़ गए हैं।

वे नहीं जानेंगे कि हम कौन थे।

वे सारे ब्योरे नहीं जानेंगे।

पर उन्हें एक परिणाम मिलेगा।

और वह परिणाम हमारी जगह बोलेगा।

अपने पेशेवर जीवन में मैंने परियोजनाओं को जन्म लेते और ग़ायब होते देखा।

कंपनियों को बढ़ते और बदलते।

बाज़ारों को रूप बदलते।

तकनीकों को पुराना पड़ते।

जो कुछ भी स्थायी लगता था, वह अस्थायी साबित हुआ।

शुरू में इस सच्चाई ने मुझे बेचैन किया।

फिर मुझे यह मुक्त करने वाली लगने लगी।

क्योंकि इसने मुझे मजबूर किया कि जो सचमुच टिकता है, उसे कहीं और खोजूँ।

और जो टिकता है, वह लगभग कभी उससे मेल नहीं खाता जो हमारे पास है।

वह उससे मेल खाता है जो हम आगे देते हैं।

एक वाक्य।

एक सिद्धांत।

एक उदाहरण।

एक इशारा।

उपस्थिति का एक रूप।

जो हम सौंपते हैं, वह तब भी यात्रा करता रहता है जब हम उसके साथ चलने के लिए मौजूद नहीं होते।

मेरे साथ अक्सर ऐसा हुआ है कि दूसरों के शब्दों या व्यवहारों में मुझे उन लोगों के टुकड़े फिर से मिले जो अब नहीं रहे थे।

सोचने का एक ढंग।

एक संवेदनशीलता।

व्यंग्य का एक अंदाज़।

एक सबक़।

उन क्षणों में मैंने एक बात समझी।

लोग पूरी तरह ग़ायब नहीं होते।

उनका एक हिस्सा दुनिया में चलता-फिरता रहता है।

स्मृति के रूप में नहीं।

प्रभाव के रूप में।

और शायद यही स्थायित्व का सबसे सच्चा रूप है।

उम्र के साथ हम धीरे-धीरे अपनी विरासत के दिखावे में रुचि लेना छोड़ देते हैं।

हम उसकी गुणवत्ता पर ज़्यादा ध्यान देने लगते हैं।

यह मायने नहीं रखता कि वह कितनी बड़ी है।

मायने यह रखता है कि वह कितनी सच्ची है।

सच्चे मन से सौंपा गया एक छोटा-सा सच, अहंकार से खड़े किए गए किसी विशाल निर्माण से ज़्यादा समय तक बचा रह सकता है।

इतिहास इससे भरा पड़ा है।

विशाल कृतियाँ ढह जाती हैं।

सिद्धांत यात्रा करते रहते हैं।

ढाँचे बदल जाते हैं।

मूल्य बचे रहते हैं।

इसीलिए आज मैं हर रिश्ते को बुआई का एक रूप मानता हूँ।

हम कभी नहीं जानते कि सचमुच क्या उगेगा।

हम कभी नहीं जानते कि कौन-सा शब्द बचा रहेगा।

कौन-सा इशारा याद रखा जाएगा।

किस उदाहरण का अनुकरण किया जाएगा।

हम बस सच्चाई के साथ कर्म कर सकते हैं।

और बाक़ी समय पर छोड़ सकते हैं।

जीवन के अंत में, मेरा मानना है कि बहुत कम लोग जीतों की सटीक संख्या याद रखते हैं।

बहुत कम लोग विस्तृत नतीजे याद रखते हैं।

बहुत कम लोग उपाधियाँ याद रखते हैं।

इसके बजाय बहुत से लोग याद रखते हैं कि उनके साथ कैसा व्यवहार हुआ।

उनका स्वागत कैसे हुआ।

उनका सम्मान कैसे हुआ।

उनसे कैसे प्यार किया गया।

यही अदृश्य विरासत है।

वह जो तस्वीरों में नहीं आती।

वह जो तालियाँ नहीं बटोरती।

वह जो ध्यान नहीं माँगती।

और फिर भी वही वह हिस्सा है जो सबसे लंबे समय तक टिकता है।

आज पीछे मुड़कर देखते हुए, मैं समझता हूँ कि किसी जीवन को सिर्फ़ इससे नहीं नापा जाता कि वह क्या हासिल करता है।

उसे इससे भी नापा जाता है कि दूसरों में क्या जीता रहता है।

उन विचारों में जो हमने सौंपे हैं।

उन लोगों में जिनकी हमने मदद की है।

उस गरिमा में जिसकी हमने रक्षा की है।

उस भरोसे में जो हमने पैदा किया है।

उस साहस में जो हमने जगाया है।

सब अदृश्य चीज़ें।

सब वास्तविक चीज़ें।

शायद सबसे वास्तविक।

क्योंकि जब समय लगभग सब कुछ बहा ले जाएगा, तब वही बचेगा जो दिखता नहीं।

जो हम अदृश्य छोड़ गए हैं।